Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 4, July-2022, ISSN 2230-7540

खजुराहो की मूर्तिकला में प्रयुक्त अंलकरण अभिप्राय

Anuja Tripathi[1]*, Dr. Nivedita Chaubey[2]

[1] Research Scholar, Eklavya University, Damoh, M.P.

[2] Associate Professor & Head, Department of Fine Arts, Eklavya University, Damoh, M.P.

सारांश - बुन्देलखण्ड मध्य भारत का एक प्राचीन क्षेत्र है।वास्तुशिल्प का उल्लेख भारत के प्राचीन ग्रन्थों में भी मिलता है, क्यांेकि यह शिल्प भारत के प्राचीन शिल्पों में से एक है। चन्देल काल में बुन्देलखण्ड में मूर्तिकला, स्थापत्य कला तथा अन्य कलाओं का विशेष विकास हुआ।चन्देलकाल में लगभग 950 ई0 से 1150 ई0 के मध्य खजुराहो में 200 वर्षों की दीर्घ समयावधि में 85 मन्दिरों का निर्माण किया गया। मिथुन-मैथुन प्राकृतिक, अप्राकृतिक ऐन्द्रिक शिल्प के कारण भी खजुराहो विश्व प्रसिद्ध है। परन्तु वस्तुतः यहाँ के शिल्प में उत्कीर्ण जनसामान्य संबंधी दृश्य यथा- शिक्षा, नृत्य, संगीत, भवन-निर्माण, युद्ध, कला, पारिवारिक प्रसंग, यात्रा, आखेट आदि अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जिनमें जीवन का उल्लास देखा जा सकता है। खजुराहो में स्थापत्य अभिप्राय (चैत्य गवाक्ष, मन्दिर वास्तु एवं सिरदल अभिप्राय) एवं शौर्य के प्रतीक के रूप में व्याल का अंकन आलंकारिक स्वरूप में अपना स्वतंत्र स्थान रखते हैं।

मुख्य शब्द - खजुराहो, मूर्तिकला, स्थापत्य कला, अलंकरण, अभिप्राय

----------X----------

प्रस्तावना

बुन्देलखण्ड मध्य भारत का एक प्राचीन क्षेत्र है। इसका विस्तार मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश में भी है। इस क्षेत्र की मुख्य बोली बुन्देली है। भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद बुन्देलखण्ड में जो एकता और समरसता है। इतिहास, संस्कृति और भाषा के मद्देनजर बुन्देलखण्ड बहुत विस्तृत प्रदेश है। लेकिन इसकी भौगोलिक, सांस्कृतिक और भाषिक इकाइयों में अद्भुत समानता है।

वास्तु विधा के चार आधारभूत विषय हैं- धरा, हम्र्य, पर्यङ्क तथा यान। प्राचीन भारतीय साहित्य में वास्तुविद्या से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं- वृहत्संहिता, मानसार मयमतम, समरांगण सूत्रधार आदि। वास्तुशिल्प का उल्लेख भारत के प्राचीन ग्रन्थों में भी मिलता है, क्योंकि यह शिल्प भारत के प्राचीन शिल्पों में से एक है। ऋग्वेद में विभिन्न प्रकार की वास्तुकृतियों का उल्लेख मिलता है जैसे-पत्थर व अन्य कठोर वस्तुओं से रचे गये दुर्ग, लकडी के बने सुन्दर प्रासाद, अलंकृत स्तम्भो से युक्त छत, असंख्य वातायनो से सुसज्जित राज प्रासाद आदि। भारतीय वास्तुकला के विकास के सम्बन्ध में लौकिक व धार्मिक रहा है। इससे धार्मिक वास्तुकला का संबध स्तुप, चैत्य, संधाराम, उपाश्रम, बिहार और मठ-मन्दिर से है। धार्मिक वास्तुकला के अंतर्गत मन्दिर निर्माण एक महत्वपूर्ण स्थान हैं। मंदिर निर्माण का हिंदू चरण 4थी से 6ठी शताब्दी ईस्वी तक शाही गुप्त काल में विकसित हुआ। लगभग छठी शताब्दी ई. तक, मंदिर वास्तुकला की शैली उत्तर और दक्षिण दोनों में समान थी। इस तिथि के बाद ही प्रत्येक ने अपनी अलग दिशा में विकास करना शुरू किया। उत्तरी भारत के मंदिर नागर नामक श्रेणी के हैं दक्षिण भारत के मंदिर द्रविड़ कहलाते हैं और मध्य क्षेत्र (कर्नाटक) और मिश्रित प्रकार (नागर और द्रविड़) के मंदिर वेसर कहलाते हैं।

खजुराहो मंदिरो का विकास

चन्देल काल में बुन्देलखण्ड में मूर्तिकला, स्थापत्य कला तथा अन्य कलाओं का विशेष विकास हुआ। खजुराहो को चंदेल राजाओं की राजधानी होने का सुयोग प्राप्त रहा। निनौरा तालाब के किनारे बसे खजुराहो के बारे में जनश्रुतियों का कहना है कि-"इसे पहले खर्जुर वाहक, खर्जुर वाटिका, खज्जुखुर, खजुराहा, खजुरा आदि नामों से जाना जाता था। निनौरा ताल नामक झील के दक्षिण-पूर्वी कोने में बसा है, किन्तु किसी समय यह एक विशाल एवं भव्य नगर था। उस भव्य नगर की गौरव-गाथा आज भी उन भग्नावशेषों' में पढ़ी जा सकती है, जो खजुराहो के

www.ignited.in

समीपवर्ती आठ वर्ग मील के क्षेत्र में बिखरे पड़े हैं, और यहाँ 85 मंदिर थे जिनमें से कुछ ही शेष व कुछ भग्नावस्था में आज भी हैं।

चन्देलकाल में लगभग 950 ई0 से 1150 ई0 के मध्य खजुराहो में 200 वर्षों की दीर्घ समयावधि में बड़ी संख्या में मन्दिरों का निर्माण किया गया। मध्यकालीन मन्दिरों की दृष्टि से एलोरा (कैलाश मन्दिर, 8वीं शती0), ओसियां (हरिहर मन्दिर, महावीर मन्दिर, सचियामाता का मन्दिर आदि, 8वीं-12वीं शती0), मोढेरा (सूर्य मन्दिर, 11वीं शती0), खजुराहो (10वीं-11वीं शती0), भुवनेश्वर (परशुरामेश्वर मन्दिर, मुक्तेश्वर मन्दिर, लिंगराज मन्दिर, राजारानी मन्दिर-7वीं-13वीं शती0), हलेबिड (होयसलेश्वर, शान्तलेश्वर, केदारेश्वर-12वीं शती0), बेलरू (चेन्नकेशव मन्दिर-1117 ई0), महाबलीपुरम (7वीं0-8वीं शती0), कांचीपुरम (कैलाशनाथ मन्दिर, वैकुण्ठ पेरूमल मन्दिर-8वीं शती0), तंजौर (बृहदेश्वर मन्दिर-1000 ई0) एवं गंगैकोण्डचोलपुरम् (बृहदीश्वर मन्दिर-1025 ई0) जैसे कला केन्द्र विशेष महत्वपूर्ण है जिनमें स्थापत्य विभिन्नता के बाद भी विषय एवं आलंकारिकता की दृष्टि से समानता मिलती है।

इनमें ब्रह्मा मन्दिर, शैव मन्दिरों में लालगुआँ महादवे मन्दिर, मातगेंष्वर मन्दिर, महादवे मन्दिर, विष्वनाथ मन्दिर, नन्दी मण्डप, दुल्हादवे मन्दिर, कन्दरिया महादवे मन्दिर, बीजमण्डल मन्दिर एवं वैष्णव मन्दिरों में वराह मन्दिर, चतुर्भुज मन्दिर, जवारी मन्दिर, वामन मन्दिर, लक्ष्मण मन्दिर और शाक्त मन्दिरों में, पार्वती मन्दिर, देवी जगदम्बी मन्दिर, लक्ष्मी मन्दिर तथा सौर मन्दिर में चित्रगुप्त मन्दिर साथ ही जैन मन्दिरों में आदिनाथ मन्दिर, घण्टई मन्दिर, पाषर्वनाथ मन्दिर आदि उल्लेखनीय हैं। ये ब्राह्मण एवं जैन धर्मों से संबंधित हैं। इनमें कोई भी बौद्ध मन्दिर नहीं है। खजुराहो में एक चैंसठ योगिनी मन्दिर भी है। यद्यपि यह मन्दिर 900 ई0 से पहले की है।

खजुराहो मूर्तिकला में अलंकरण की अवधारणा

शिल्प में अलंकरण की अवधारणा मूर्तिकार की स्वतंत्रता और सृजनशीलता से बहुत निकटता से सम्बन्धित है। जब उन्हें अपनी कल्पनाओं और विचारों को अपने माध्यमों में मूर्त रूप देने का अवसर मिलता है तो उन्हें अधिक स्वतंत्रता महसूस होती है। खजुराहो के मन्दिरों में विभिन्न भावनाओं और कल्पनाओं की आलंकारिक रूप में अभिव्यक्ति की गयी है। एक मन्दिर की आलकांरिकता एक तरफ कलाकारों के रचनात्मक कौशल को दर्शाता है, वहीं दूसरी तरफ जीवनशैली की प्रथाओं का भी पता चलता है। भारतीय लोगों की परम्परागत धारणा के अनुसार, मन्दिर का निर्माण केवल पृथ्वी के लोगों के लिए ही नहीं किया गया है, वरन् अंतरिक्ष के खगोलीय स्थल जो अक्सर आकाश में घूमते रहते हैं उनका भी निवास स्थान माना जाता है। खजुराहो के मन्दिरों पर एक अलौकिक पृष्ठभूमि में देवी-देवताओं, अर्धदेवी देवताओं की प्रतिमाओं के साथ ही साथ सुन्दर देहयष्टी युक्त आकर्षक अप्सराओं का अंकन भी किया गया है जो अपने सहज सौन्दर्य, गतिमान भंगिमाओं एवं आकर्षक वेशभूषा के कारण सहज ही लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करती है। खजुराहो की शिल्प की यह विशेषता है कि यहाँ पर देवी-देवताओं और अप्सराओं की आकृतियों के साथ ही साथ वृहद आकार में काम शिल्प का भी अंकन हुआ है। मिथुन-मैथुन प्राकृतिक, अप्राकृतिक ऐन्द्रिक शिल्प के कारण भी खजुराहो विश्व प्रसिद्ध है। परन्तु वस्तुतः यहाँ के शिल्प में उत्कीर्ण जनसामान्य संबंधी दृश्य यथा- शिक्षा, नृत्य, संगीत, भवन-निर्माण, युद्ध, कला, पारिवारिक प्रसंग, यात्रा, आखेट आदि अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जिनमें जीवन का उल्लास देखा जा सकता है। शिल्प में अलंकरण दर्शकों पर सृजनात्मक प्रभाव डालता है। यदि मन्दिर के मुख्य देवता ईश्वरीय शक्ति को प्रदर्शित करते हैं तो अलकंरण मानवगत स्वभाव तथा गुणों को अभिव्यक्त करता है। आलंकारिक अभिप्रायों की समृद्धि मन्दिर के विभिन्न हिस्सों पर दिखायी देती है।

भारतीय मन्दिर स्थापत्य कला में अभिव्यक्त शिल्प को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया गया है:-

1) धार्मिक (देवी-देवता एवं महाकाव्यों तथा धार्मिक कथाओं के रूपायन)

2) अर्द्ध देवी-देवता (अप्सरा, किन्नर, गंधर्व आदि)

3) लौकिक (दैन्दिनप्रसंग, कामशिल्प, मनोरंजन, संगीत, शिक्षा आदि)

4) पशु-पक्षी (मयूर, शुक, मकर, सर्प, सिंह, मृग आदि)

5) प्रकृति (वृक्ष, कमल, लता, सरोवर, नदी, पर्वत आदि)

6) प्रतीक (स्वस्तिक, पूर्णकलश आदि)

7) आलंकारिक अभिप्राय (ज्यामितीय अलंकरण, प्राकृतिक अभिप्राय, स्थापत्य अभिप्राय, आदि)

www.ignited.in

यहाँ चन्देलकालीन खजुराहो के शिल्प में अभिव्यक्त आलंकारिक अभिप्राय को चार वर्गो में वर्गीकृत किया जा सकता है:-

1) ज्यामितीय अभिप्राय (त्रिभुज, समचतुर्भुज, वृत्त, सोपानकृत, लहरिया, मुक्ता अभिप्राय)

2) प्राकृतिक अभिप्राय (पुष्प, पत्र-वल्लरी, लता-वल्लरी, वृक्ष अभिप्राय)

3) स्थापत्य अभिप्राय (चैत्य गवाक्ष, मन्दिर वास्तु एवं सिरदल अभिप्राय)

4) पशु एवं पक्षी अभिप्राय (मकर, हस्ती, सिंह, शुक अभिप्राय)

इसके साथ ही खजुराहो के शिल्प में लोकप्रिय प्रतीकों का भी आलंकारिक अभिप्राय के रूप में अंकन किया गया है। अधिकांश मन्दिरों पर कुछ ऐसे अभिप्राय आलंकारिक स्वरूप में दिखाए गए हैं जो मांगलिक प्रतीकों में अपना स्वतंत्र स्थान रखते हैं। यथा- पक्ष एवं पूर्णकलश। खजुराहो में स्थापत्य अभिप्राय (चैत्य गवाक्ष, मन्दिर वास्तु एवं सिरदल अभिप्राय) एवं शौर्य के प्रतीक के रूप में व्याल का अंकन आलंकारिक स्वरूप में अपना स्वतंत्र स्थान रखते हैं।

खजुराहो के मन्दिरों में अभिव्यक्त ज्यामितीय अभिप्राय

खजुराहो के मन्दिरों में इसे दो प्रकार से चिह्नित किया जा सकता है

(1) स्थापत्यगत ज्यामिति एव

(2) विशुद्ध आलंकारिक ज्यामितीय अभिप्राय।

स्थापत्यगत ज्यामिति

- स्तम्भ (चैकोर, बेलनाकार, अष्टकोणीय, षट्कोणीय आदि)
- मण्डप, अर्द्धमण्डप तथा महामण्डप के वितानों पर वृत्ताकार वर्गाकार (एक बड़े वर्ग के अंदर अनेक वर्ग एक दूसरे की भुजाओं के मध्य से बने आकृतियाँ)
- ज्यामितीय आकृतियों का अंकन।
- प्रायः सभी मन्दिरों का एक चतुर्भुज जगती का होना।
- मन्दिर में प्रकाश हेतु आयताकार गवाक्ष
- वृत्ताकार आमलक
- मण्डप, अर्द्धमण्डप एवं महामण्डप का चतुर्भुज पीढ़ायुक्त संरचना, जो नीचे से ऊपर की और क्रम से छोटी होती जाती है।
- मन्दिरों में रथों की रचना
- प्रक्षेपण-विक्षेपण
- आलंकारिक पट्टिकाएँ आदि।

विशुद्ध आलंकारिक ज्यामितीय अभिप्राय

मन्दिर स्थापत्य पर बिन्दु, रेखा, त्रिभुज, वर्ग अथवा चतुर्भुज, वृत्त ये सभी ज्यामितीय आकृतियाँ ब्रह्माण्ड की मूल ऊर्जा का प्रतीकात्मक रूपांकन होता है। सृजन, विकास एवं विघटन के किसी स्वरूप के निर्माण में विशेष गुणों के समाविष्ट करने में इन्हें प्रयोग किया जाता है। मध्यकालीन मन्दिर स्थापत्यों के साथ ही साथ चन्देलकालीन शिल्प पर इनका अंकन इसी ब्रह्माण्डीय शक्ति के सूचक के रूप में किया गया था। ऐसा समझा जाता है कि मन्दिरों पर अंकित लगभग सभी ज्यामितीय अभिप्राय प्रजनन क्षमता अथवा वंशवृद्धि अथवा लौकिक जीवन की शक्ति और उत्थान के प्रतीकात्मक रूपांकन हैं। इस प्रकार ये सभी एक प्रकार से जीवन के प्रतीक माने जाते हैं। इसलिए ये ज्यामितीय अभिप्राय अत्यन्त शुभ दृष्टि से देखा जाता है। इन ज्यामितीय अभिप्रायों की शुभता को आज भी हम अपने घरों में रंगोली अथवा अन्य लोक कलाओं में देख सकते हैं। ज्यामितीय रूपों के इस जीवन की विशेषता को अलकंरणों के रूप में अभिव्यक्ति की जाती है। जब ये प्रतीक अभिप्रायों के साथ संबद्ध होते हैं तो इनमें विविधता के साथ शुभता के गुणों में वृद्धि हो जाती है। इसलिए इन्हें मन्दिरों पर विभिन्न प्रतीकों के रूप में भी अंकित किया गया था। खजुराह¨ के प्रायः सभी मन्दिर में ज्यामितीय अभिप्रायों की उपस्थिति देखी जा सकती है। ये मन्दिर के मण्डप, अर्द्धमण्डप तथा अधिष्ठान पर मूर्तिय¨क¨ आकर्षक एवं गतिमय लयात्मक प्रवाह लाने की दृष्टि से उत्कीर्ण किये गये हैं। यही नहीं मन्दिर के लगभग प्रत्येक भाग पर इन अभिप्राय¨ क¨ देखा जा सकता है। खजुराहो के शिल्प में यह त्रिभुज, समचतुर्भुज अथवा वर्ग, वृत्त, सोपानकृत, लहरियायुक्त रेखात्मक प्रवाह एवं बिन्दुओं से निर्मित मुक्ता माला अभिप्रायों की उपस्थिति बहुधा देखी जाती है।

www.ignited.in

प्राकृतिक अभिप्राय

अलकंरण हेतु प्रकृति का चित्रण जीवन के प्रतीक के रूप में किये जाने की परम्परा रही है। प्रकृति को सारी कलाओं की जननी माना गया है। प्रकृति की छंटा देखकर और उसकी सृष्टि के रहस्यों को समझ कर ही मानव अपनी कलाकृतियों को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित हुआ। समस्त मानवीय क्रियाएँ, ज्ञान-विज्ञान और कलाएँ इसी प्रकृति के सृष्टिकारक रहस्य को समझने, उनका उपभोग करने और उन्हीं के आधार पर पुनः सृष्टि करने में ही प्रस्फुटित हुयी हैं। जहाँ ये आलंकारिक अभिप्राय किसी विशिष्ट विचार या भाव की सृष्टि के निमित्त नहीं भी होते हैं वहाँ भी ये अपने स्वरूप का मांगलिक प्रभाव डालते हैं और दर्शक के शारीरिक एवं मानसिक सौन्दर्य-बोध का परिष्कार करते हैं। कतिपय विद्वानों के अनुसार आलंकारिक कलाओं को तीन अलग-अलग उप-शाखाओं, तंदूलविकार, कुसुमविकार एवं पुष्पस्तरन में विभाजित किया जा सकता है।

तंदुलविकार अभिप्राय

चावल के दानों के प्रदर्शन के साथ हस्तियों, अष्वो, ऊँटों और पक्ष की आकृतियों को ठीक तरह से बनाते हैं। विद्वानों के अनुसार, इस ललित कला का अर्थ विभिन्न प्लेटों पर भोज्य वस्तुओं के साथ खुबसूरत नैवेद्याज बनाना था, जो देवताओं को प्रस्तुत किये जाते थे।

कुसुमविकार अभिप्राय

देवताओं की आकृतियों को सजाने के लिए विभिन्न रंगो के पुष्पों के माला बनाने के लिए सन्दर्भित किया गया। कुसुमविकार पुष्पो की सजावट अथवा प्रदर्शन के अनुरूप जल से परिपूर्ण पात्र में पुष्पों के विभिन्न प्रकार के गुच्छों से सज्जा की जा सकती है। देवताओं की पूजा करने के लिए विभिन्न बर्तनों और स्थानों में पुष्पों की उचित व्यवस्था करना ही आलकारिक कला के रूप में विकसित हो गयी। मन्दिर अथवा घर के द्वार अथवा मण्डप को विभिन्न उत्सवों में पुष्पों से अलंकरण आज भी प्रचलित हैं।

पुष्पस्तरण अभिप्राय

पुष्पस्तरण को फूलवारी से समझा जा सकता है। प्राचीन काल में अलकंरण और सौन्दर्य के उद्देश्य से अपने सोने के कमरे को या मन्दिर के अंदर "पुष्पों के साज" बनाने की प्रथा थी। इस प्रकार अलंकरण किसी भवन के विभिन्न भागों को सजाने से सम्बन्धित है। विद्वानों के अनुसार अलकंरण ऐसी विशेषता है, जो किसी वस्तु को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए उपयुक्त होती है।

वर्ग अभिप्राय

त्रिभुज अभिप्राय

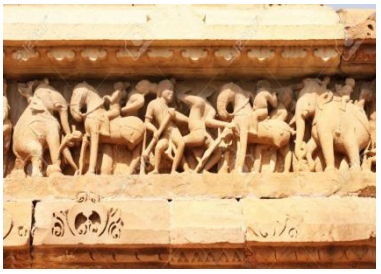

पशु अभिप्राय

संदर्भ ग्रंथ

1. अवस्थी रामाश्रय, खजुराहो की देव प्रतिमाएँ, ओरिएण्टल पब्लिशिंग हाउस, आगरा प्रथम संस्करण 1969
2. अविनाश बहार वर्मा, भारतीय चित्रकला का इतिहास, मेरठ, 1968
3. ए0एल0 श्रीवास्तव, भारतीय कला प्रतीक, इलाहाबाद, 1989, पृ0 14
4. A.B. Ganguly, Fine Arts Acient India, New Delhi, 1979 Page- 108-117

Corresponding Author

Anuja Tripathi*

Research Scholar, Eklavya University, Damoh, M.P.

www.ignited.in